System Psy.

Dr. Sunil Kr. "Suman"
Assistant Professor (Guest)
Deptt. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date-7-11-20
DO-Next-class

Humanistic Psychology

Contribution of Maslow

आत्म-सिद्धि की आवश्यकता (Self actualization need):- आत्मसिद्धि की आवश्यकता व्यक्ति में तब उत्पन्न होती है जब उपर्युक्त चारों तरह की आवश्यकताएं तुष्टि हो जाती है। आत्म-सिद्धि से तात्पर्य आत्म-पूर्ति की आवश्यकता, अपनी अन्तःशक्तियों को अनुभव करने या उसका ज्ञान होने से तथा सही अर्थ में सर्जनात्मक (creative) बनने में होता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आत्म-सिद्धि से तात्पर्य अपने अन्तःशक्ति के शिखर पर पहुँचने से होता है ताकि वह पूर्ण रूप से एक कार्य सम्पन्न (Functions) व्यक्ति बन सके। इस संप्रत्यय के प्रतिपादन में मैसलो (Maslow, 1970) ने कर्ट गोल्डस्टीन (Kurt-Goldstein) के प्रति अपना आभार व्यक्त किया है। मैसलो का मत है कि सचमुच में आत्म-सिद्धि की आवश्यकता एक विस्तृत आवश्यकता है जिसमें 17 मेटाआवश्यकताएं (metaneeds) होती है। इन मेटाआवश्यकताओं का कोई अनुक्रम (hierchy) नहीं होता है और सभी बराबर रूप से सामर्थ्य (Potent) होते हैं। मेटाआवश्यकताओं के कुछ उदाहरण हैं - पूर्णता, सुन्दरता, उत्तमता, सफाई आदि की आवश्यकता।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

ऊपर के पाँचों तरह की आवश्यकता क्रियात्मक आवश्यकता (conative need) है, जिन्हे मैसलो के अनुसार मौलिक आवश्यकता (basic need) कहा जाता है। मैसलो ने इससे सम्बन्धित दो पदों का प्रतिपादन किया है:- अभाव की आवश्यकता (basic need) कहा जाता है। मैसलो ने इससे संबंधित दो पदों का प्रतिपादन किया है - अभाव की आवश्यकता (deficit motive or deficiency motive) तथा वर्द्धन की आवश्यकता (growth motive)। पहले तरह की आवश्यकता को D अभिप्रेरण (D motive) तथा दूसरे तरह की आवश्यकता को B अभिप्रेरक (B motive) भी कहा जाता है। D अभिप्रेरक में ऊपर में मैसलो द्वारा बतलाये गए पाँच आवश्यकताओं में चार आवश्यकताएं सम्मिलित होती है तथा B अभिप्रेरकों में आत्मसिद्धि की आवश्यकता या मेटाआवश्यकता सम्मिलित होता है।

मैसलो ने यह बतलाया है की मात्र 10% लोग ही आत्म-सिद्धि के आवश्यकता तक पहुँच पाते हैं। इन्होंने उन व्यक्तियों की जिनमें आत्म-सिद्धि की आवश्यकता होती है, की कुछ विशेषताएं बतलाया है। इसमें निम्नांकित प्रमुख है।

(i) ऐसे व्यक्तियों में वास्तविकता का प्रत्यक्षण अधिक मजबूत होता है। ऐसे लोगों में किसी तरह का पूर्वाग्रह नहीं होता है। फलस्वरूप इससे वास्तविकता के प्रत्यक्षण में विकृति नहीं आती है।

(ii) ऐसे लोगों की प्रकृति न तो रूढ़िवादी होती है न ही कृत्रिम होती है। अतः ऐसे लोगों में स्वाभाविकता, सहजता, तथा स्वतः प्रवृत्ति (spontaneity) का गुण होता है।

(iii) ऐसे लोगों में पूर्ण परिशुद्धता (complete perfection) की भावना होती है।

End.